गज़ल

उम्र जलवों में बसर हो,ये जरूरी तो नहीं
हर शबे गम की सहर हो,ये जरूरी तो नहीं

1– चश्मे साकी से पिओ या लबे सागर से पिओ
बेखुदी आठों पहर हो ,ये जरूरी तो नहीं

2– नींद तो दर्द के बिस्तर पर भी आ सकती है
उनके आगोश में सिर हो ये जरूरी तो नहीं

3– शेख करता तो है मस्जिद में खुदा को सजदे
उसके सजदों में असर हो,ये जरूरी तो नहीं

4– सबकी नजरों में हो साकी यह जरूरी है मगर
सब पे साकी की नजर हो,ये जरूरी तो नहीं